आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2759 • उदयपुर, शुक्रवार 15 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

जैसलमेर (राजस्थान) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 19व 20जून 2022 को गीता आश्रम हनुमान चौराहा, जैसलमेर में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् स्व. गंगा देवी हजारीमल व्यास एवं स्व. ललीता देवी के परिजन रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 60, कृत्रिम अंग वितरण 58, कैलिपर वितरण 16 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् डॉ. श्रीमती प्रतिभासिंह (जिला कलेक्टर, जैसलमेर) अध्यक्षता श्रीमान् हरिवल्लभ जी कल्ला (सभापति, नगर परिशद), विशिष्ट अतिथि श्रीमती अंजना जी मेघवाल (राजस्थान महिला आयोजन सदस्य), श्री गौरीकिशन जी मेहरा (पूर्व अध्यक्ष, नगरपालिका), श्रीमान् हरिशंकर जी व्यास (शिविर आयोजक), श्री दशलाल जी शर्मा (अध्यक्ष, जन सेवा समिति) रहे।

नाथूसिंह जी शेखावत, श्री गोविन्दसिंह जी सोलंकी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री बहादुरसिंह जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

बल्लारी (कर्नाटक) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून 2022 को एस.एस. जैन संघ जैन मार्केट, बल्लारी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति,बल्लारी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 268, कृत्रिम अंग माप 91, कैलिपर माप 37 की सेवा हुई तथा 14 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् केवल चंद जी विनायिका (अध्यक्ष, आर.एस जैन संघ) अध्यक्षता श्रीमान् कमल जी जैन (अध्यक्ष, तेरापंथ धर्मसंघ), विशिष्ट अतिथि श्रीमान आनन्द जी मेहता (भामाशाह , समाजसेवी), श्रीमान् प्रणीण जी पारख (अध्यक्ष, श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति), श्रीमान् अशोक जी भण्डारी (उपाध्यक्ष, श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति)।

डा.अजमुद्धीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहाश जी मेहता (पी.एन.डो.), डॉ. नाथुसिंह जी, डॉ. गोविन्द सिंह जी (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी उप प्रभारी) श्री महेन्द्र सिंह जी रावत (आश्रम प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

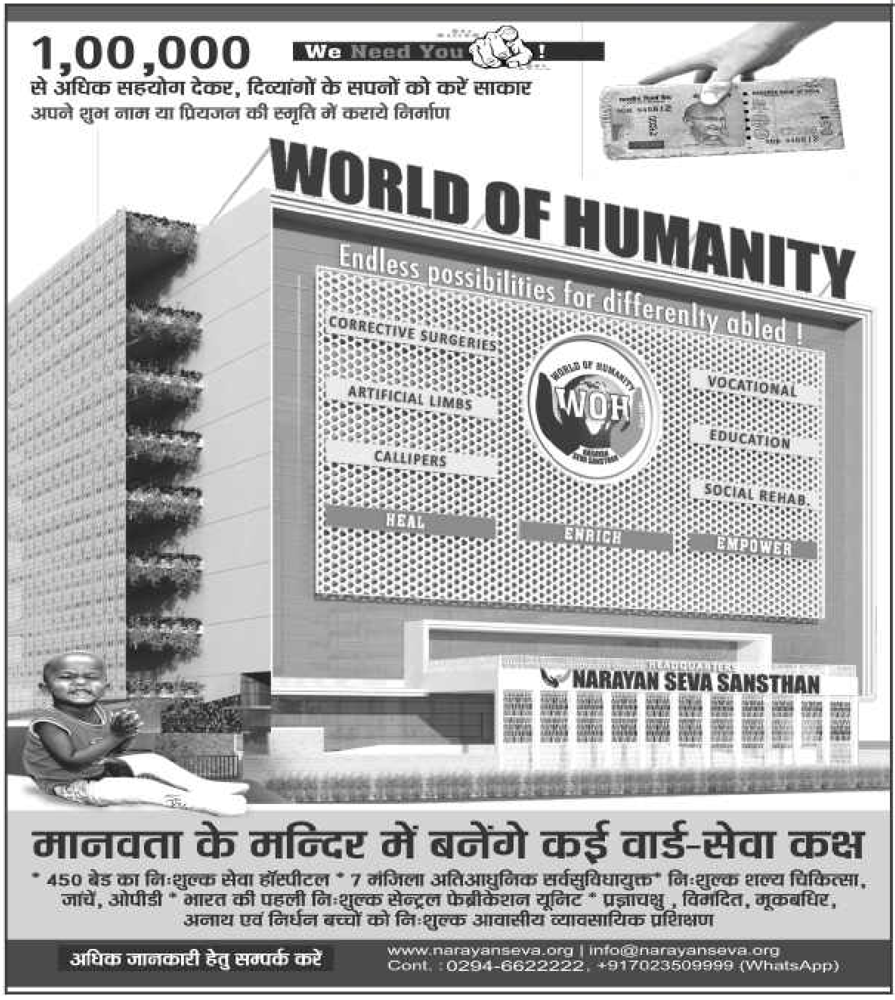

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्डी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

सबसे बड़ी तपस्या

नर सेवा ही नारायण सेवा है। मानव सेवा से बड़ी न कोई तपस्या है न ही धर्म। जरूरतमंदों व पीड़ितों की सेवा से ही ईश्वर प्रसन्न होते हैं। यदि मार्ग में ऐसा कोइ भी दुःखी–पीड़ित जन मिले तो ठहर कर उसकी यथा योग्य सेवा अवश्य करें।

सत्यनगर का राजा सत्यप्रतापसिंह अत्यंत न्यायप्रिय शासक था। एक बार उसे पता चला कि सौम्यदेव नामक एक ऋषि अनेक सालों से लोहे का एक डंडा जमीन में गाड़कर तपस्या कर रहे हैं और उनके तप के प्रभाव से डंडे में कुछ अंकुर फूट कर फूल–पत्ते निकल रहे हैं और जब वह अपनी तपस्या में पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेंगे तो उनका डंडा फूल–पत्तों से भर जाएगा। सत्यप्रताप नेसोचा कि यदि उनके तप में इतना बल है कि लोहे के डंडे में भी अंकुर फूट कर फूल–पत्ते निकल सकते हैं तो फिर मैं भी क्यों न तप करके अपना जीवन सार्थक बनाऊं। यह सोच करवह ऋषि के समीप लोहे का डंडा गाड़कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों की मौसम की परवाह न कर तपस्या करने लगा। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि दोनों ही बारिश की परवाह न कर तपस्या में मगन रहे। कुछ देर बाद एक व्यक्ति बुरी तरह भीगा हुआ ठंड से कांपता आया। उसने ऋषि से ठहरने की जगह के बारे में पूछा पर ऋषि ने आंख खोलकर भी नहीं देखा। निराश होकर वह राजा सत्यप्रताप के पास पहुंचा और गिर पड़ा। राजा ने उसकी इतनी बुरी हालत देखकर उसे उठाया। नजदीक ही एक कुटिया नजर आई। उसने उस व्यक्ति को कुटियां मे लिटाया और उसके समीप आग जलाकर गर्माहट पैदा की। गर्माहट मिलने से व्यक्ति होश में आ गया। इसके बाद राजा ने इसके बाद राजा ने कुछ जड़ी–बुटी पीसकर पिलाई। कुछ ही देर बाद वह व्यक्ति बिल्कुल ठीक हो गया। सुबह होने पर राजा जब उस व्यक्ति के साथ कुटिया से बाहर आया तो यह देखकर हैरान रह गया जो लोहे का डंडा उसने गाड़ा था। वह ताजे फूल–पत्तों से भरकर झुक गया। इसके बाद राजा ने ऋषि के डंडे की ओर देखा। ऋषि के लौहे दण्ड में थोड़े बहुत निकले फूल–पत्ते भी मुरझा गए थे। राजा समझ गया कि मानव सेवा से बड़ी तपस्या कोई और नहीं। वह अपने राज्य में वापस लौट गया और प्रजा का समुचित देखभाल करने लगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

सब जगह मंजुल भटकर
ली शरण अब आपकी।
पार ना या ना करना,
दोनो मर्जी आपकी ।।

हे प्रभु मैंने अपने आपको सौंप दिया रघुनाथ जी चरणों में रख दिया।

मातृ हमें किस बात की चिंता

हमारे ऐसे श्रीरघुनाथ हमे किस बात की चिंता। यही विभीषण ने कहाँ, यही अंगद ने कहा, यही हनुमान जी ने कहा, यही आप कहते है, यही पूरी दुनियाँ कहती है। बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय। बोलिये सीताराम भगवान की जय।

महिम जी – और यही बात गुरुदेव आपश्री की भावक्रांति भी कहती है।

कल पर मत टाले
आज को सम्भाले।
सेवा की राह पर राहत के फूल।
सेवा का बजे डंका।।

क्षार ही जीवन का, निराशा जीवन की बाधा, गरिमा की महिमा और सेवा पंथ हुआ प्रशस्त ये बहुत ही सुन्दर, बहुत अच्छी भावक्रांति की पुस्तके हैं।

गुरुजी – ये तो भगवान ने लाला ये वाणी भगवान ने दी, ये विचार भगवान दिये। मैं तो आप सबसे प्रार्थना करता हूँ अपने भावों को अच्छा रखें।

निर्मल मन मनन जन
सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल
छिन्द्रन भावा।।

अपनी गांठें खोल दीजिए। अब तक की जो गांठें बान्धी हैं वो धीरे–धीरे ध्यान के माध्यम से खोल दीजिए।

मीठी मनुहार

उड़ पत्रिका उतावली, बण तुरंग असवार।
खबरां दे सामूहिक ब्याव री, आज्यो सपरिवार।
विनय पूर्वक पाती लिखी, प्रेमपूरित मनुहार।
सज्जन बण, बाराती–समधी पधारिज्यो सपरिवार।
फुरसत म्हाने है नहीं, आ मत कहिज्यो आप।
काम परायो है नहीं, ओ है सेवा को काज।।
निर्धन–दिव्यांग 51 बेटा बणसी बनड़ा सम्मान।
वाट–जोवती बेटियां रो करणो है कन्यादान।
आयां बिना रहिज्यो मती, इण सब रे ब्याव।
28–29 अगस्त, 2022 रविवार और सोमवार।
घणे मान विनती, आइज्यो जरूर सुजान।
आप पधारिया सोभा होवसी, बढ़सी म्हाको मान।
कुंकुम पतरी फेर भेजस्यां, इण रे लारेलार।
बाट घणी जोवेला, संगलो नारायण परिवार।
शुभ वेला स्वागत तांई, म्है सब तैयार।।

प्रतीक्षारत –: कैलाश 'मानव', कमला देवी, प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश, वंदना, देवेन्द्र, पलक एवं समस्त नारायण सेवा परिवार

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

सादगी भरा जीवन जीने वाले व्यक्ति सदैव संतुष्ट और प्रसन्न रहते हैं। सादगी से व्यक्ति की आवश्यकताएं सीमित हो जाती है। व्यक्ति में असंतोष या स्पर्धा तभी होती है जब वह किसी की बराबरी में, समान स्तर में जीने की कोशिश करता है। आजकल तो व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ दिखावटी बनकर जीने का आकांक्षी हो गया है। इसके लिये वह कमाने में, दिखाने में, प्रतिष्ठा में सबकुछ करने को तैयार हो जाता है। इस 'सबकुछ' के कारण ही वह नैतिकता को खूंटी पर टांग सकता है। जब नैतिकता या सत्य का आश्रय ही नहीं रहेगा तो शांति व संतोष कहाँ रहेगा ? आज ज्यादातर व्यक्ति असंतुष्ट व असंतोषी दिखाई देते हैं। इससे वैमनस्य व ईर्ष्या के भावों का अनावश्यक उदय होता है। व्यक्ति कितना भी तड़क–भड़क से भरा जीवन क्यों न जी ले, पर उसे संतोष तो सादगी से ही मिलेगा। संसार की वस्तुएं असंतोष ही बढ़ाती हैं। जब तक हम इनसे विरक्त न होंगे तब तक संतोष कैसे होगा? इसलिए जीवन में सुखी, संतोषी तथा अलमस्त रहना है तो सादगी भी एक उपाय है।

कुछ काव्यमय

सादा जीवन जी लिया, रख कर उच्च विचार।
जीवन उसका धन्य है, भागे सभी विकार।।
सहज सादगी से जियो, यह जीवन अनमोल।
सादा जीवन मनुज की, गांठें देता खोल।।
जीवन में हो सादगी, उच्च बनेंगे भाव।
उसको लगता हर समय, इस जीवन का चाव।।
सरल बनो सादे रहो, कहते सारे संत।
भारमुक्त होंगे सभी, छूट जाय सब थंत।।
जिसने साधी सादगी, ऊँची रही उड़ान।
जगा गये वो जगत को, वे ही बने महान।।

अपनों से अपनी बात

यही है अवसर

संसार में कुशल समाचार जानने के लिये एक दिन भगवान ने नारद जी को पृथ्वी पर भेजा। उन्हें सबसे पहले एक दीन–दरिद्र पुरुष मिला जो अन्न और वस्त्र के लिये तड़प रहा था। नारद जी को उसने पहचाना और अपनी कष्ट कथा रो–रो कर सुनाने लगा। उसने कहा, जब आप भगवान से मिले तो मेरे गुजारे का प्रबन्ध करवा लेवें। नारद जी भी उसका दुःख देखकर दुःखी हुए बिना नहीं रहे, उदास मन से उन्होंने वहाँ वे विदाई ली और ऐसा आश्वासन दिया कि मैं प्रभु से अवश्य बात करूंगा, तुम्हारे लिये।एक गाँव में नारद जी की भेंट एक धनाढ्य पुरुष से हुई। उन्होंने भी नारद जी को पहचानने में देर नहीं की पर उनका उलाहना कुछ और ही था। नारद जी ने उनसे कुशलक्षेम पूछा तो उस धनवान ने खिन्न होकर कहा, मुझे भगवान ने कैसे झंझाल में फँसा दिया। थोड़ा मिलता तो मैं शान्ति से रहता और कुछ भजन कर पाता, पर इतनी दौलत तो संभाले नहीं संभलती। ईश्वर से मेरी प्रार्थना करना कि मुझे इस झंझाल से मुक्ति दें। नारद जी को

यह विषमता अखरी पर वे स्वर्गलोक की ओर प्रस्थान कर गए। भगवान ने नारद जी को उस यात्रा का वृत्तान्त पूछा तो देवर्षि ने दोनों घटनाएँ सुना दी। नारायण हँसें और बोले देवर्षि मैं कर्म के अनुसार ही किसी को कुछ दे सकने में विवश हूँ। जिसकी कर्मठता समाप्त हो चुकी है उसे मैं कहाँ से दूँ। तुम अगली बार जाओ तो उस दीन–हीन से कहना कि दरिद्रता के विरुद्ध लड़े और साधन जुटाने का प्रयत्न करें तभी उसे दैविक सहायता मिल सकेगी। कहा भी है।

उद्यमेव ही सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथे। न ही सुप्तस्य, सिंहस्य प्रवेशन्ति, मुखे मृगाः।।

इस प्रकार से धनी महानुभाव से कहना यह दौलत तुझे दूसरों की सहायता के लिये दी गई है। यदि तू संग्रही बना रहा तो जंजाल ही नहीं आगे चलकर वह विपत्ति भी बन जायेगी। इसे तुम स्वयं कम कर सकते हो, इसका सात्विक सदुपयोग करके। असहाय, बीमारों, दुखियों, दरिद्रों एवं निराश्रितों की सेवा में इसे लगाना ही इसका सर्वोत्तम उपयोग है। क्या हम भी ऐसे झंझाल में फंसे हुए तो नहीं हैं? क्या हमें रातों की नींद बराबर आ रही है ? क्या हम धन के मात्र चौकीदार बनकर रह गए हैं? क्या हमारे मन की स्थिति भी उस धन महानुभाव के सदृश हैं यदि हाँ तो यही है अवसर जागने का, यहीं है अवसर पुण्य कमाने का, यह समय है अपनी धनरूपी लालसा को सम्मानित करने का। अपनी आवश्यकता से अधिक संचित पूँजी को दे डालिये, विकलांगों, निराश्रितों, बीमारों, विधवाओं एवं असहायों की सेवा में।

आपकी पूँजी मात्र तिजोरी में बंद रह गई है तो किसी के काम नहीं आएगी। और यदि इसका सेवा में उपयोग हो गया तो विकलांग भी अपने पाँवों पर चल कर, निराश्रित बाल गोपाल भी समाज में अपना स्थान बना लेंगें, मौत से झुझता हुआ, गरीब बीमार भी स्वस्थ होकर आपके कल्याण और सर्वसुख की मंगल कामना प्रभु से करेगा। –कैलाश 'मानव'

संगत का असर

संगत का प्रभाव हर प्राणी पर अवश्य ही पड़ता है। जो जैसी संगत में रहेगा, वो वैसा ही हो जाएगा। बुरी संगत में रहने पर अच्छा व्यक्ति भी बिगड़ जाता है तथा अच्छी संगत में रहने पर बुरा व्यक्ति भी अच्छा बन जाता है। बहुत विरले ही होते हैं, जिन पर संगत का असर नहीं पड़ता।

एक जवान लड़का बुरी संगत में फँस गया। उसके पिताजी ने उससे बुरी संगत छोड़ने के लिए कहा तो उसने जवाब दिया कि मैं भले ही उनके साथ रहता हूँ, परन्तु उनकी गंदी आदतें नहीं सीखता। मुझ पर उनकी बातों का कोई असर नहीं होता। तब पिताजी ने उसे बुरी संगत से निकालने के लिए एक उपाय सोचा। एक दिन वे बाजार

से एक किलो सेब लाए। उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर वे सब सेब फ्रिज में रखने के लिए कहा। बेटे ने सेब लिए और वह उन्हें फ्रिज में रखने लगा, तभी उसने देखा कि उनमें से एक सेब खराब था। उसने पिजाजी से कहा कि इन सेबों में से एक सेब सड़ा हुआ है, इसे बाहर फेंक दूँ क्या?

पिताजी ने कहा–नहीं, नहीं, कोई बात नहीं। इसे भी रखा रहने दो। इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। बेटे ने वे सभी सेब वैसे के वैसे फ्रिज में रख दिए। दूसरे दिन पिताजी ने बेटे से फ्रिज में रखे वे सेब मंगवाए। बेटा जब फ्रिज में से सेब लेकर आ रहा था तो उसने देखा कि उस थैली में 4–5 सेब सड़ गए थे।

उसने पिताजी से कहा–मैंने कहा था ना कि वो सड़ा हुआ सेब फेंक देता हूँ, देखिए इसकी वजह से दूसरे 4–5 सेब भी सड़ गए, परन्तु आपने मेरी बात नहीं मानी। अगर आप मेरी बात मान लेते, तो ये सेब सड़ते नहीं। तुरन्त पिताजी ने कहा–बेटा, मैं भी तुम्हें यही समझा रहा था कि अगर तुम बुरे लड़कों के साथ रहोगे तो तुम्हारी भी आदतें उनकी तरह बुरी बन जाएँगी, ठीक इन सेबों की तरह। बेटा पिताजी की बात समझ गया और उसने उसी दिन से बुरी संगत छोड़ दी।बुरे रास्तों पर ले जाने वाले मित्रों से सदैव दूर ही रहना चाहिए। बुरे मित्र भले व्यक्ति को भी बुरा बना देते हैं। जैसे एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है, ठीक उसी तरह यदि हमारे संगी–साथियों में एक भी व्यसन, आलस, निंदा या अन्य किसी भी बुरी आदत वाला है तो वह अन्य दूसरे मित्रों को भी अपने जैसा ही बना देगा।

— सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश इस व्यक्ति को नहीं जानता मगर जब उसने कहा कि सुबह शिविर का उद्घाटन करना है तो उसका माथा ठनका। शिविर का उद्घाटन राजस्थान सरकार के केबीनेट मंत्री मदन दिलावर करने वाले थे। कैलाश के मन में विचार कौंधा कि कहीं यह व्यक्ति मदन दिलावर तो नहीं, उसकी उससे पूछने की हिम्मत तो नहीं हुई मगर उसने इतना जरूर कहा कि – आप क्यूं धोते हैं ? हम धो देते हैं। वह व्यक्ति नहीं माना तो वह वापस शिविर में लौट गया।

सुबह उसी व्यक्ति को शिविर के उद्घाटन हेतु आते देखा तो वह नतमस्तक हो उठा। वह व्यक्ति मदन दिलावर ही था। एक मंत्री की ऐसी सादगी और सहजता देख कैलाश भाव विभोर हो उठा। उसके मन की इससे और बल मिल गया कि देश में अच्छे व्यक्तियों की कमी नहीं, सिर्फ उनकी पहचान नहीं हो पाती।

अटरू में ही राज्य सरकार की भ्रमणशील चिकित्सा इकाई का भी एक शिविर चल रहा था। शिविर में एक स्त्री अचानक बेहोश हो गई, सबको यही लगा कि स्त्री का बच पाना मुश्किल है। नारायण सेवा का भी शिविर पास ही लग रहा था, यहां के डाक्टरों ने जाकर स्त्री को देखा और कुछ आवश्यक इन्जेक्शन लगाये तो स्त्री बच गई। भ्रमणशील इकाई के पास इतने साधन नहीं थे मगर इस घटना से नारायण सेवा का नाम हो गया। हर कोई इसकी भूरि भूरि प्रशंसा करने लगा।

संस्था का कार्य ज्यूं ज्यूं बढ़ता जा रहा था, खर्च भी उसी के अनुपात में बढ़ रहा था लेकिन रुपयों की आवक उसके अनुसार नहीं बढ़ रही थी, इस कारण बार भयंकर तंगी का सामना करना पड़ता था। एक बार तो स्थिति यह हो गई कि संस्थान के पत्रक डाक से भेजे जाने थे मगर डाक टिकिट तक के पैसे नहीं थे। कैलाश की यह स्थिति थी कि किसी को कहे भी तो क्या कहे, अगर कहे तो भी क्या कोई उसकी बात का यकीन करेगा। अब तक नारायण सेवा संस्थान सेवा के क्षेत्र में एक स्थापित नाम हो चुका था। दूर दूर तक इसकी लोकप्रियता फैल चुकी थी। कैलाश का हर संभव प्रयास रहता था कि इस नाम को मिटने नहीं देना है, कठिनाइयां चाहे कितनी भी आयें।

अंश - 156

शिव आराधना के पावन श्रावण मास में संस्थान से जुड़कर करें दीन दुःखी दिव्यांगजनों की सेवा....और पायें पुण्य

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

कथा आयोजक :
अनिल कुमार मित्तल, अरूण कुमार मित्तल एवं सपरिवार, आगरा

श्रीमद्भागवत कथा

दिनांक:
14 से 20 जुलाई, 2022
समय : सायं
4.00 से 7.00 बजे तक

संस्कार
चैनल पर सीधा प्रसारण

कथा व्यास
डॉ. संजय कृष्ण 'सलिल' जी महाराज

स्थान : श्री खाटूश्याम मन्दिर, जीवनी मंडी, आगरा (उ.प्र.)
स्थानीय सम्पर्क सूत्र :9837362741, 9837030304

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

शहद से धोएं चेहरा, सॉफ्ट होगी स्किन

तेज गर्मी और उमस में अपने खोए निखार के लिए चेहरे के साथ गर्दन पर ताजा नींबू का रस लगाएं। दस मिनट बाद गुनगुने पानी से धो लें। समान मात्रा में हल्दी पाउडर व बेसन को दूध के साथ मिलाकर लगाएं और सूखने पर गुनगुने पानी से धो लें। चेहरे को शहद से भी धो सकते हैं, क्योंकि शहद एक मॉइश्चराइजर का काम करता है। कच्चे आलू का रस चेहरे पर लगाकर सूखने दें। इससे दाग–धब्बे दूर होंगे। ऐलोवरा का ताजा रस लगाने से मुहांसे और दाग–धब्बे दूर होते हैं।

चंदन पाउडर के पेस्ट से दूर करें खुजली

बारिश के दिनों में खुजली एक आम समस्या है। इसके लिए एक चम्मच नींबू के रस में दो चम्मच बेकिंग सोड़ा मिलाकर पेस्ट तैयार करें। इसे प्रभावित क्षेत्र में दस मिनट तक लगातार ठंडे पानी से धोने से आराम मिलता है। ठंडी तासीर का चंदन भी इसमें मददगार है। इसे गुलाब जल में मिलाकर पेस्ट बनाए एवं खुजली वाली जगह पर लगाएं। खुजली में राहत मिलेगी। नारियल तेल भी इंफ्लेमेशन (सूजन) व कीड़े–मकोड़े के काटने वाले जगह पर लगाते है तो राहत देता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

संपूर्ण समर्पण सफलता की कुंजी

श्रीरामकृष्ण परमहंस शिष्यों को उपदेश दे रहे थे। वे समझा रहे थे कि जीवन में आए अवसरों का महत्त्व व्यक्ति साहस तथा ज्ञान की कमी के कारण नहीं समझ पाते। समझकर भी उनके पूरे लाभों का ज्ञान न होने से उनमें अपने आप को पूरी शक्ति से लगा नहीं पाते। शिष्यों की समझ में उनकी यह बात ठीक ढंग से न आ सकी। तब श्रीरामकृष्ण देव बोले– "नरेंद्र! कल्पना कर कि तू एक मक्खी है। सामने एक कटोरे में अमृत भरा रखा है। तुझे यह पता है कि यह अमृत है, बता उसमें एकदम कूद पड़ेगा या किनारे बैठकर उसे स्पर्श करने का प्रयास करेगा।" उत्तर मिला–"किनारे बैठकर स्पर्श का प्रयास करूँगा। बीच में एकदम कूद पड़ने से अपने जीवन–अस्तित्व के लिए संकट उपस्थित हो सकता है।" साथियों ने नरेंद्र की विचारशीलता को सराहा, किंतु परमहंस जी हँस पड़े और बोले–"मूर्ख! जिसके स्पर्श से तू अमरता की कल्पना करता है, उसके बीच में कूदकर उसमें स्नान करके सराबोर होकर भी मृत्यु से भयभीत होता है।" चाहे भौतिक उन्नति हो या आध्यात्मिक– जब तक आत्मशक्ति का पूर्ण समर्पण नहीं होता, तब तक सफलता नहीं मिलती।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

आपके साथ हमारे मनों की तरंगों का प्रेम का सम्बन्ध है। तरंगें करोड़ों कोश दूर तक जाती है। देख रहा हूँ। मैं अनुभव कर रहा हूँ। तो मेरे मन के विचार आपको मिलते रहेंगे। आपके मन के विचार भी मेरे पास आते रहेंगे। इसी के साथ ओम शांति–शांति।

जा
सके यदि अतीत में,
हो जाये यह जनम सफल।
गीता का उपदेश सुनूं
प्रभु चरणों में बैठकर।।

एक चीज मैं कई बार पहले कभी बैठता तो सोचा करता था कि यदि आपके सामने ऐसा यंत्र रख दिया जावे जिसमें आपका भूतकाल देख सकें तो हर सैकण्ड में बताये आप क्या देखना चाहेगे? आमतौर पर व्यक्ति बोलता मेरा बचपन देखना चाहूंगा। मैं पिछला जन्म देखना चाहूंगा, पिछले जन्म में क्या था? कोई व्यक्ति कहता है कि कृष्ण भगवान गीता का उपदेश कैसे कररहे थे? वो कुरुक्षेत्र मैं देखना चाहता हूँ। तो उससे व्यक्ति की साईकॉलोजी का मापदण्ड पकड़ में आता है, समझ रहे हो ना बात को? कि ये आत्मकेन्द्रित कि भाई मेरा जीवन, मेरा बचपन, मेरा पिछला जीवन, मेरा कौनसा जन्म पहले हुआ। मैं पिछले जन्म मे क्या था? तो ये मोटे रुप से आत्म केन्द्रित हो गया। वो आदिनाथ भगवान, ऋषभदेव भगवान कैसे हैं ? उनकी हिस्ट्री पढ़ते हैं, वो घटना देखने जाऊंगा नेमिनाथ भगवान की जब शादी होने की थी और कबूतर देखे, हिरण देखे। क्यों इनको बांध रखा है पिंजरों में? बोले आपकी यहां शादी हो रही है तो उसमें बलि दी जायेगी। फिर उन्होंने कहा मुझे शादी नहीं करनी। मेरी वजह से पशु को मारा जा रहा है तो ऐसा काम करना ही नहीं। कोई कहेगा में नेमीनाथ भगवान का वो जीवन देखना चाहूंगा। जब वो शादी के लिए गये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 509 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023